[श्री सिद्धेश्वर प्रसाद]

This Resolution is very important at the present juncture. Our country is passing through danger due to Chinese and Pakistani aggression. We have realised on various occasions that we have to depend on our own power, whether it is internal danger or it is from outside.

[अध्यक्ष महोदय पीठासीन हुए
MR. SPEAKER *in the Chair*]

It appears from the situation created as a result of Pakistani aggression that there is no dearth of national and emotional integration in our country.

अध्यक्ष महोदय : सभा में काफी शोर हो रहा है। यदि माननीय मंत्री का भाषण सुनना केवल मेरा और रिपोर्टरों का काम है तो हमें सुन लेने दीजिये।

श्री हरि विष्णु कामत (होशंगाबाद) : सदस्य मंत्री महोदय का भाषण सुनने के लिये उत्सुक हैं।

अध्यक्ष महोदय : माननीय सदस्य बैठ जायें।

ताश्कन्द में राष्ट्रपति अय्यूबखां के साथ प्रधान मंत्री की प्रस्तावित भेंट तथा अन्य मामलों के बारें में

PROPOSED MEETING OF THE PRIME MINISTER WITH PRESIDENT AYUB KHAN AT TASHKENT AND OTHER MATTERS

प्रधान मंत्री तथा अणु शक्ति मंत्री (श्री लालबहादुर शास्त्री) : 18 सितम्बर को मुझे रूस के मंत्री परिषद के अध्यक्ष, श्री कोसीजिन से एक पत्र मिला था जिसमे भारत और पाकिस्तान के बीच पुनः शान्ति स्थापित के लिये राष्ट्रपति अय्यूबखां और मेरी ताशकन्द में भेट का प्रस्ताव था। मैंने 22 सितम्बर को श्री कोसीजिन को पत्र भेज दिया है जिसमें मैंने भारत और पाकिस्तान के बीच शान्तिपूर्ण सम्बन्ध स्थापित करने के लिये भेट सम्बन्धी उनके प्रस्ताव को स्वीकार किया है। श्री कोसीजिन ने इसी आशय का एक पत्र राष्ट्रपति अय्यूबखां को भी भेजा है। राष्ट्रपति अय्यूब द्वारा श्री कोसीजिन को भेजे गये पत्र में उन्होंने श्री कोसीजिन को इस प्रस्ताव के लिये धन्यवाद दिया है और ताश्कन्द में बातचीत के लिये कुछ शर्तें रखी है। राष्ट्रपति अय्यूब ने यह भी कहा है कि य शर्तें पहले सुरक्षा परिषद में तय की जानी चाहिए। मने 22 सितम्बर को कोसीजिन के प्रस्ताव तथा अपनी स्वीकृति के बारे में बता दिया है।

16 नवम्बर को मुझे श्री कोसीजिन ने सूचित किया कि उन्हें पाकिस्तान के राष्ट्रपति से एक पत्र प्राप्त हुआ है जिसमें यह अनुरोध किया गया है कि रूस के मंत्रि परिषद के अध्यक्ष के प्रस्ताव के अनुसार ताश्कन्द में उनकी और मेरी भेंट की व्यवस्था की जाये। श्री कोसीजिन ने इस सम्बन्ध में मेरे विचार जानने की इच्छा प्रकट की है। जैसा कि सभा अच्छी तरह जानती है कि मैंने प्रस्ताव के लिये मना नहीं किया था। इसके साथ ही मैंने यह स्पष्ट कर दिया था कि जहां तक काश्मीर के प्रश्न सम्बन्ध है, हमारे लिये इस स्थिति से पीछे हटना संभव नहीं है कि काश्मीर भारत का अंग है और हमारे लिये अपने राज्य क्षेत्र को देने का प्रश्न नहीं उठता।

इसके बाद मास्को में हमारे राजदूत तथा रूस सरकार के बीच विचार विमर्श हुआ और मैं भी भारत में रूसी राजदूत से मिला। मुझे श्री कोसीजिन से 27 नवम्बर को एक पत्र प्राप्त हुआ जिसमें उन्होंने मुझे सूचित किया कि पाकिस्तान के राष्ट्रपति बिना किसी पूर्व शर्त के ताश्कन्द में प्रस्तावित बातचीत के लिये तैयार है। मुझे बातचीत की तारीख के लिये कुछ महत्वपूर्ण सुझाव दिये गये। मैंने श्री कोसीजिन को एक पत्र भेजा जिसमें मैंने जनवरी, 1966 के पहले सप्ताह में बैठक की अपनी सहमति दी। अब यह घोषित किया गया है कि यह भेंट 4 जनवरी, 1966 से आरंभ होगी।

जहां तक हमारा सम्बन्ध है हमने ताश्कन्द में भेंट करने की बात स्वीकार कर ली है क्योंकि हम बातचीत द्वारा शान्तिपूर्ण तथा पड़ौसी के नाते अच्छे सम्बन्ध स्थापित करने में विश्वास करते हैं। मैंने यह स्पष्ट कर दिया है कि ताश्कन्द में भारत तथा पाकिस्थान के बीच प्रस्तावित बातचीत में समूचे तौर पर पारस्परिक सम्बन्धों पर विचार किया जाये ताकि दोनों देश स्थायी शान्ति तथा सहयोग के साथ रह सकें।

हमारी भौगोलिक स्थिति ऐसी है कि हमें परस्पर अच्छे तथा सहयोगपूर्ण सम्बन्ध स्थापित करके रहना चाहिए। हम इस बात में विश्वास करते हैं कि युद्ध और सनिक संघर्ष से राष्ट्रों के बीच समस्याओं का कोई हल नहीं हो सकता। यदि पाकिस्तान ने बात चीत का प्रस्ताव सच्चे दिल से यह महसूस करके स्वीकार किया है कि झगड़े से शान्ति अच्छी है तो ताश्कन्द में होने वाली बातचीत लाभदायक रहेगी।

मैं सभा को बताना चाहता हूं कि इस समय हमारी सीमाओं पर क्या स्थिति है। मैं अपनी विदेश यात्रा के बारे में भी जो मैं अगले महीने करूंगा सभा को बताना चाहता हूं।

पाकिस्तान के साथ पश्चिमी सीमाओं पर स्थिति अशान्त है और युद्ध विराम समझौते के बावजूद पाकिस्तान समय समय पर विभिन्न स्थानों पर इसका उल्लंघन कर रहा है। हमारी सेनाओं बड़े संयम से उसका सामना कर रही है फिर भी उन्होंने स्वभावतः अपने ठिकानों की रक्षा करनी है।

राजस्थान क्षेत्र में युद्ध विराम लागू होने के बाद पाकिस्तान ने उस समझौते की, जिसे उसने स्वीकार किया है, पूर्ण अवहेलना करके कुछ अलग अलग चौकियों पर कब्जा किया है। संभवतः इस स्थिति को सहन नहीं किया जा सकता। अतः स्थिति को सुधारने के लिये कुछ कार्यवाही की गई है और इसमें काफी प्रगति हुई है।

चीन ने भी हमारी सीमाओं पर अपनी गतिविधियां बढ़ा दी हैं। उन्होंने कई स्थानों में घुसपैठ करने का प्रयास किया है। यह कहना कठिन है कि चीन का वास्तविक इरादे क्या हैं। परन्तु यह स्पष्ट है कि वह हर समय तनाव का वातावरण बनाये रखना चाहता है तथा अपना दबाव रखना चाहता है।

हमारी सीमाओं पर वर्तमान स्थिति को ध्यान रखते हुए हमें निरन्तर सतर्क रहना है और देश को पाकिस्तान तथा चीन की सांठ गांठ पूर्ण गतिविधियों से सचेत रहने की आवश्यकता है। हमें यह भी याद रखना चाहिए कि हमें लम्बे समय तक स्थिति का सामना करना पड़ेगा।

आगामी सप्ताहों में मेरा विचार अमरीकी तथा बर्मा सरकार के निमंत्रण पर इन दोनों मित्र देशों का दौरा करने का है। भारत और अमरीका में कई बातें एक समान हैं। मुझे पूर्ण विश्वास है कि 1 फरवरी, 1966 को राष्ट्रपति जॉनसन के साथ होने वाली मेरी बातचीत से दोनों देशों के सम्बन्ध और अधिक घनिष्ठ होंगे। मैं राष्ट्रपति जॉनसन को धन्यवाद देना चाहता हूं कि उनके खाद्य सम्बन्धी सहायता बढ़ाने के निर्णय से हमारी वर्तमान कठिन खाद्यस्थिति का सामना करने में हमें अधिक सहायता मिलेगी।

सभा को याद होगा कि कुछ मास पूर्व बर्मा के प्रेसीडेन्ट, जनरल ने विन भारत आये थे और मुझे बर्मा आने का निमंत्रण दे गये। मैं सोमवार 20 दिसम्बर को बर्मा जाउंगा और 23 दिसम्बर भारत लौट आउंगा।

मैं जिन देशों में जाउंगा उनकी जनता को भारत की जनता की शुभकामनाओं का संदेश दूंगा। यह हमारा कर्तव्य है कि हम विश्व के देशों की सहानुभूति प्राप्त करने के प्रयास में उनके समक्ष अपने दृष्टिकोण स्पष्ट करें। हम फिर यह स्पष्ट कर देना चाहते हैं कि भारत शान्ति और विश्व भ्रातृत्व का पक्का समर्थक है।

[श्री लाल बहादुर शास्त्री]

देश को अब भी संकट का सामना करना पड़ रहा है। हमें इनका प्रभावकारी रूप से सामना करना है। हाल के कुछ महीनों ने यह साबित कर दिया कि हमारी सबसे बड़ी शक्ति हमारी जनता की एकता है। जहां तक राष्ट्रीय समस्याओं का सम्बन्ध है उनका मुकाबला करने के लिये भारतीय जनता एक है। इन कठिन परिस्थितियों में सभी राजनैतिक दलों ने जो सहयोग दिया है उसके लिये मैं उनका आभारी हूं। मुझे पूर्ण विश्वास है कि जनता में एकता की भावना बनी रहेगी।

अध्यक्ष महोदय : मुझे कुछ ध्यान दिलाने वाली सूचनाओं के प्रस्ताव भी प्राप्त हुए हैं। यदि सदस्य चाहें तो मैं उन सदस्यों को बोलने की अनुमति दूं जिन्होंने ये प्रस्ताव दिये हैं अथवा सभा के हर दल से एक सदस्य को बोलने का अवसर दिया जाये।

श्री हीरेन मुकर्जी (कलकत्ता-मध्य) : क्या समस्त सभा के लिये यह अधिक अच्छा नहीं होगा कि विवरण के बारे में हर दल के सदस्य बहुत संक्षेप में अपने विचार व्यक्त करें, क्योंकि ये ध्यान दिलाने वाली सूचनाएं है ? मैं नहीं समझता .....

अध्यक्ष महोदय : मैं श्री हीरेन मुकर्जी से सहमत हूं। सभा के लिये यह अधिक अच्छा होगा कि यदि हम जनता के प्रतिनिधियों के रूप में विवरण तथा यात्राओं के बारे में अपने अपने विचार व्यक्त करें। अतः मेरे लिये यह बड़े हर्ष का विषय होगा कि समस्त देशवासियों की ओर से संक्षेप में हम अपने विचार व्यक्त करें।

श्री प्र० के० देव (कालाहांडी) : हमारे प्रधान मंत्री तथा पाकिस्तान के राष्ट्रपति के बीच बातचीत कराने के लिये रूस के प्रधान मंत्री ने जो प्रयत्न किया है हम उनका पूर्ण समर्थन करते हैं। हमें यह पूरी आशा है कि ताश्कन्द की वार्ता सलफ होगी और दो पड़ोसियों के बीच स्थायी शांति कायम होगी।

यह आशा है कि प्रधान मंत्री की अमरीका यात्रा से दो महान प्रजातंत्रों में मैत्री और अधिक सुदृढ़ होगी। संयुक्त राज्य अमरीका ने पी० एल० 480 के अन्तर्गत भारत को जो सहायता देने की आज घोषणा की है, उसके लिये हमें उसे धन्यवाद देते हैं। हमें पूर्ण आशा है कि प्रधान मंत्री की बर्मा की यात्रा से बहुत सी समस्याओं के समाधान में सहायता मिलेगी।

श्री हीरेन मुकर्जी : हम सब प्रधान मंत्री की विभिन्न देशों की यात्रा की सफलता के लिये कामना करते हैं। संयुक्त राज्य अमरीका की सरकार के निमंत्रण पर प्रधान मंत्रीजी अमरीका की यात्रा पर जा रहे हैं। मैं नहीं कहूंगा कि वह वहां न जायें, परन्तु यह अवश्य कहूंगा कि अमरीका सरकार ने जो निमंत्रण भेजा है वह बहुत सन्मानपूर्ण नहीं है। यह सही है कि अमरीका ने भारत को दी जाने वाली सहायता में कुछ बढ़ोतरी की है, लेकिन स्थिति इतनी अच्छी नहीं है जितनी होनी चाहिए थी। मैं आशा व्यक्त करता हूं कि वह सम्मानपूर्ण राष्ट्र के सम्मानपूर्ण प्रतिनिधि के रूप में वहां जाये और उन्हें अपने कार्य में पूर्ण सफलता मिले।

मैं ताश्कन्द के ऐतिहासिक नगर की प्रधान मंत्री की यात्रा के लिये सफलता की आशा करता हूं। यह बहुत अच्छा है कि भारत और पाकिस्तान की वार्ता एक ऐसे नगर में होगी जो बुखारा और समरकन्द के बहुत समीप है। श्री शास्त्री जी ने इस बारे में स्वयं स्पष्ट कर दिया है कि हम शांति चाहते है। मैं आशा प्रकट करता हूं कि युद्धविराम के सुदृढ़ होने के पश्चात शांति स्थापित होगी। परन्तु प्रधान मंत्री के इस कथन के बारे में कि बातचीत में काश्मीर को छोड़ कर भारत तथा पाकिस्तान के बीच समूचे पारस्परिक सम्बन्धों पर विचार किया जायगा, मैं स्पष्ट करना चाहता हूं कि हम सब उनके साथ हैं तथा हम उनके इस कथन से पूर्णतः सहमत है कि काश्मीर हमारे देश का अंग है, यह हमारे साथ रहेगा और इस पर बातचीत नहीं हो सकती। मैं आशा करता हूं कि इस बारे में विदेशों में जो भ्रम पैदा हो गया है और जो हमारे इस दृष्टिकोण से पूर्णतः सहमत नहीं है कि काश्मीर बातचीत का विषय नहीं हो सकता, प्रधान मंत्री जी अपनी सूझबूझ से उनके समक्ष हमारा दृष्टिकोण रखेंगे तथा उनका यह भ्रम दूर करने में सफल होंगे।